स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी राजा विजय सिंह

सचिन प्रधान
रुड़की (हरिद्वार)

आज हम सब का सौभाग्य है कि हम आज़ाद भारत में साँस ले रहे हैं और उस ऐतिहासिक काल खण्ड का हिस्सा बन रहे हैं जिसमें आज हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। जरा सोच कर देखिए पराधीनता की बेड़ियों से आजादी की वो बेचैनी कितनी बड़ी रही होगी, करोड़ों लोग इस उम्मीद के साथ जागते थे कि हमारा देश आज़ाद कब होगा और कितने ही लोग भारत माता की जय और वन्देमातरम बोलकर देश की आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर देते थे।

देश भर में बहुत से आन्दोलन हुए एवं बहुत सी क्रान्तियाँ हुईं। ऐसी ही एक क्रान्ति 1857 से भी 33 वर्ष पूर्व सन् 1824 में वर्तमान जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के रुड़की तहसील के कुन्जा किला में शहीद राजा विजय सिंह एवं उनके प्रधान सेनापति कल्याण सिंह के नेतृत्व में हुई थी, जो आज क्षेत्रवासियों के द्वारा कही व गायी जाती है। इस क्रान्ति का जिक्र प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने भाषण में भी किया है। भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर से शोधकर्ता क्रान्ति भूमि कुन्जा किला को प्रणाम करने और उस मिट्टी को मस्तक पर सजाने के लिए बार–बार आते रहते हैं।

1813–1828 तक चलने वाली इस क्रान्ति का विकराल रूप 1822–1824 तक रहा। इस क्रान्ति की शुरुआत राजा विजय सिंह एवं उनके साथियों ने ब्रिटिश सरकार को भूमि का लगान न देने से प्रारम्भ की थी और इस आन्दोलन से उन्होंने आस–पास के पूरे क्षेत्र एवं भारतीय नागरिकों को ब्रिटिश सरकार को लगान न देने के इस आन्दोलन से जोड़ दिया था।

भू–राजस्व देने के खिलाफ राजा विजय सिंह जी ब्रिटिश शासन के सामने एक चट्टान बनकर खड़े थे। उन्हें देखकर अन्य व्यक्तियों एवं राजाओं ने भी ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। इसके पीछे राजा विजय सिंह का उद्देश्य ब्रिटिश सरकार को आर्थिक रूप से कमजोर करना था। उस समय राजा विजय सिंह जी ने देशवासियों से आह्वान किया था कि यह पुण्यभूमि भारत हमारी माता है, हम इसमें निवास करते हैं। हम इसकी गोद में खेले एवं बड़े हुए हैं तो कोई कैसे इस पर अपना अधिकार जमा सकता है। कहते हैं राजा विजय सिंह का अपना राज्य अपनी राजधानी और अपना झण्डा था। कुन्जा किले पर हमेशा भगवा ध्वज लहराता रहता था।

ब्रिटिश सेना के विरुद्ध अपने सैनिकों के उत्साहवर्धन में राजा विजय सिंह द्वारा दिये गये संदेश के कुछ अंश आज भी क्षेत्रवासियों के द्वारा बोले व कहे जाते हैं। जो इस प्रकार हैः–

"मुझे आप लोगों के पराक्रम पर पूर्ण विश्वास है कि ब्रिटिश उपनिवेशवादी अब अधिक दिन तक भारत में नहीं टिक सकेंगे। धूल चाटते ब्रिटिश अधिकारी व सैनिक आपकी वीरता का बखान चारों ओर करते फिर रहे हैं। धैर्य व आत्मविश्वास का वरण करते हुए ईश्वर पर भरोसा रखो। वीर कभी मरता नहीं। माँ भारती की रक्षार्थ जो न्यौछावर होता है वह सदा–सदा के लिए अमर हो जाता है। स्वर्गगामी होता है। तुम्हारी कीर्ति दिक्–**दिगन्त फैलेगी – विजयी भवः।"**

ब्रिटिश सरकार की गलत नीतियों, शोषण, उत्पीडन एवं अन्याय के खिलाफ उनके साथ प्रमुख रुप से उनके प्रधान सेनापति कल्याण सिंह, कंवर सिंह, भूरा सिंह एवं जोरावर सिंह थे जो अपने मरते दम तक माँ भारती के लिए लड़ते रहे और अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उस समय ब्रिटिश सरकार राजा विजय सिंह एवं उनके साथियों और ग्रामवासियों के साहस और वीरता के सामने नतमस्तक थी। राजा विजय सिंह का डर उनके दिलों दिमाग में छाया हुआ था, उसी समय अंग्रेज अधिकारियों ने उनके हौसले और पराक्रम को देखकर कुन्जा किले का नाम कुन्जा बहादुरपुर कर दिया और आज कुन्जा किले को वर्तमान में कुन्जा बहादुरपुर के नाम से जाना जाता है।

धीरे–धीरे राजा विजय सिंह ने अपनी सेना को और संगठित किया और नये सिपाहियों की भी भर्ती कर ली। सेना को उचित प्रशिक्षण भी दिया गया। राजा विजय सिंह द्वारा 1822 से 1824 के मध्य जो राजाज्ञा जारी की गई, उन्हें क्षेत्र में घूम–घूम कर आमजन तक पहुँचाया गया, सबको अपने कर्त्तव्य समझाए गये और माँ भारती की रक्षा के लिए लोग संकल्पित एवं संगठित होते चले गये।

राजाज्ञा (1822–1824 ई.)

- **पराधीनता का जुआँ उतार फेंको।**
- **मालगुजारी भूराजस्व देना बन्द कर दो।**
- **ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के समस्त राजचिहनों को मिटा दो।**
- **तहसील खजानों को हस्तगत कर लो।**
- **क्रान्तिकारी कैदियों को जेलों से मुक्त करा लो।**
- **अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए बाध्य कर दो।**

उस समय का सैनिक गीत जो आज भी क्षेत्र के बच्चों और बडों की जुबान पर रहता है, उस गीत को गुनगुनाकर आज भी लोग राजा विजय सिंह और उनके सहयोगियों के प्रति उनके सम्मान, साहस, वीरता और पराक्रम को याद करते हैं।

सैनिक गीत

आण घुसे जबसे अंग्रेज चौपट होग्या राज सारा।
खोश ली आजादी दाब लिया म्हारा जमीदारा।।
कुन्जा, कान्ठ, चाँद, सेठपुर, जाण्डखेडा, राणी लण्ढ़ोरा।
लगी गाँठ कर ठाड मिल गुजरों ने पिट्या ढिंढोरा।।
छोड़ जा सुण अंग्रेज लुटेरे ये सोहणा देश है म्हारा।
ढूँढ ढूँढ के गला काट्टैंगे गोरे, इत क्या धरा है थारा।।

सन 1824 में हुए इस विद्रोह को गुर्जर विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। इस आन्दोलन में क्षेत्र के सभी लोगों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया एवं ब्रिटिश सरकार की नाक में दम कर के रखा था। राजा विजय सिंह जी ने उस समय कहा था कि ये अंग्रेज कौन हैं जो हम पर राज करना चाहते हैं, जब तक हमारे बाजुओं में दम है तब तक हम अपनी जमीन जायदाद को कम नहीं होने देंगे। ये सात समुद्र पार के अंग्रेज हमारे अधिकारों का फैसला करने वाले कौन होते हैं। यह अंग्रेजों के खिलाफ उस समय का विरोध है जब किसी भी देशी रजवाडे में अंग्रेजों के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। उस कठिन समय में अपनी सेना को और क्षेत्रवासियों को संगठित करना बहुत कठिन कार्य था। राजा विजय सिंह और उनके साथियों के विरोध के कारण लोगों में साहस की चिंगारी फूटी और इस विद्रोह ने विकराल रुप धारण कर लिया।

फिरंगियों को देश से बाहर निकाल दो, क्रान्तिकारी कैदियों को जेल से मुक्त कर दो ऐसे नारों से क्षेत्र गूंजने लगा, क्रान्ति की ज्वाला चारों और फैल गयी, क्षेत्र के किसानों ने मालगुजारी देना बन्द कर दिया और इस प्रकार स्वाधीनता का बिगुल बज गया। उस समय माल विभाग द्वारा जमीन के नवीन प्रबन्धों के नाम पर थोपे गये अत्याचार का अन्त उनका प्रथम एवं अन्तिम लक्ष्य था।

अंग्रेज अधिकारी एच.जी. वाल्टन लिखते हैं, **"अक्टूबर 1822 में गुर्जरों के एक संगठन से माल विभाग को बहुत सी परेशानी और बाधाओं का सामना करना पडा। इतनी बड़ी सशस्त्र क्रान्ति या सामूहिक विरोध इससे पहले कभी नहीं हुआ था।"** गुर्जरों के इस संगठन का आतंक गढ़वाल, देहरादून, कूमायूँ शिवालिक की पहाडियों, बिजनौर, मुरादाबाद, मेरठ तथा सहारनपुर जनपदों में भरपूर था। उस समय कोई भी व्यक्ति संगठन की योजनाओं को प्रकट करने की हिम्मत नहीं करता था। ब्रिटिश सरकार की सिरमोर बटालियन, गोरखा पल्टन और पुलिस जो नये नये अस्त्र–शस्त्र से युक्त रहती थी वह भी राजा विजय सिंह और उनके सहयोगियों का कुछ नहीं बिगाड़ सकी। निडर होकर राजा एवं उनके सहयोगी इन अंग्रेजों को भारत छोडने के लिये विवश करने की योजनाएं बनाते रहते और हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहते। इनके बुलन्द हौंसले और बहादुरी के किस्से दूर–दूर तक फैलने लगे लोग संगठित होते गये। जगह–जगह पर ब्रिटिश शासन का विरोध होने लगा और अंग्रेजों में खलबली मच गयी क्योंकि राजा विजय सिंह को उस समय रोकने का कोई भी विकल्प नजर नहीं आ रहा था। राजा विजय सिंह माँ भारती के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार बैठे थे। राजा ने सेना में भर्ती कर ली और हथियारों का इन्तजाम भी बढता गया। किसी भी समय युद्ध विकराल रुप धारण कर ले उसके लिए तैयारी होने लगी।

चारों और के किसानों का विरोध और भूराजस्व न देने के कारण ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नौकरशाह और कलेक्टर

यंग घबरा उठे। कुन्जा किले से होने वाली घोषणाओं को जनता के द्वारा पूरी तरह से स्वीकार किया गया और उस पर अडिग रहने के कारण तत्कालीन जनपद सहारनपुर के समूचे प्रशासन को भयभीत कर दिया। वीर पुरुषों के अंग्रेजों के खिलाफ नारों और घोषणाओं से ब्रिटिश शासन हिल उठा। 24 सितम्बर 1824 को एवर और शोरे नामक दो अंग्रेज अधिकारी पुलिस और राजस्व अधिकारियों के साथ कुन्जा किले में पहुँचे। राजा विजय सिंह ने सम्मान के साथ उनका अतिथि सत्कार किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने समझौता प्रस्ताव रखा जिसमें सेनापति कल्याण सिंह का साथ छोडना भी शामिल था। राजा विजय सिंह गरज उठे और साफ साफ उत्तर दिया कि हम आपको अपनी आजादी के अपहरण की छूट कदापि नहीं देंगे। चाहे इसके लिए हमें अपने प्राणों का बलिदान देना पड़े या तुम्हारे प्राण लेने पड़ें। हमारे देश में हमारे ही समक्ष समझौता रखने वाले हमारे अधिकार तय करने वाले तुम होते कौन हो और मैं कल्याण सिंह का साथ छोड़ दूँ यह तो असम्भव है। हम दोनों का जीवन भारत माता के लिए समर्पित है। हमारा उद्देश्य और लक्ष्य भी एक है। राजा विजय सिंह की निर्भीकता और दृढ़ता के साथ उत्तर पाकर दोनों अंग्रेज अधिकारी वापस लौट गये और जाकर समस्त वृतान्त ग्रिण्डाल को सुनाया, जिसे सुनकर वह भी हतप्रभ रह गया। इतिहासकारों के अनुसार स्वयं ग्रिण्डाल ने कहा था, **"वीर कदापि समझौते का वरण नहीं करते वरन् सदैव संघर्ष का ही रास्ता चुनते हैं।"** उसने कहा हमारा यह परीक्षण भी व्यर्थ हो गया। अंग्रेज परेशान हो गये और उनकी सभी योजनाएं एक के बाद एक विफल होती चली गईं। विरोध जारी रहा राजा विजय सिंह को रोकने का कोई मार्ग ब्रिटिश शासन को नजर नहीं आ रहा था। अंग्रेजों ने षडयन्त्र के माध्यम से लोगों को मिलाना चाहा किन्तु उस समय लोग संगठित थे और अंग्रजों की गलत नीतियों से छुटकारा पाना चाहते थे। इधर गुर्जरों का भय अंग्रेजों के लिए बढ़ता जा रहा था। धीरे–धीरे राजा विजय सिंह की शक्ति भी बढ़ती जा रही थी।

ऐसे आन्दोलनों के कारण ब्रिटिश सरकार को ईस्ट इण्डिया कम्पनी का भविष्य खतरे में नजर आ रहा था। कम्पनी की नौकरशाही विचित्र स्थिति से गुजर रही थी। इसी समय एक घटना घटित हुई। 01 अक्टूबर 1824 ई. को आधुनिक हथियारों से युक्त 200 पुलिस गार्डस तहसीलदार, थानेदार व कुछ अंग्रेज अधिकारियों की सुरक्षा में एक बहुत बडा खजाना ज्वालापुर कोषागार से सहारनपुर के मुख्य कोषागार में भेजा जा रहा था। इसकी सूचना राजा विजय सिंह को मिली उन्होंने कल्याण सिंह को बुलाकर इस घटनाक्रम से अवगत कराया। राजा विजय सिंह के नेतृत्व में उनकी एक सैनिक टुकड़ी ने भगवानपुर से पूर्व की ओर गांव कलालहटी के पास खजाने को लूट लिया। उस समय ब्रिटिश अधिकारियों के सामने से खजाने को बिना जान माल के नुकसान के लूट कर ले जाना और अंग्रेजों का कुछ न कर पाना अंग्रेजों की बहुत बड़ी हार थी। यह चर्चा पूरे देश में फैल गई। लूटी हुई धनराशि को गरीब जनता में बांट दिया गया और कुछ धनराशि से नये सैनिकों की भर्ती की गई जिससे इन अंग्रेज लुटेरों से मातृ भूमि की रक्षा की जा सके।

ब्रिटिश शासन बौखलाया हुआ था और बहुत ही सोच विचार के बाद निर्णय लेकर गोरखा पलटन के कमाण्डर को आदेश दिया गया कि ग्रिण्डाल और उपजिलाधिकारी शोरे के निर्देशन में कुन्जा किले पर आक्रमण कर दिया जाये। अक्टूबर 1824 में गोरखा पलटन ने राजा विजय सिंह के किले पर आक्रमण कर दिया। भारत माँ का प्रत्येक सपूत बड़ी वीरता के साथ लड़ा। अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके। दिन–रात बराबर उस पल्टन से लड़ाई चलती रही जो उस समय के नवनिर्मित हथियारों से युक्त थी। आखिरकार युद्ध करते–करते माँ भारती के वीर सपूत पहले कल्याण सिंह और फिर राजा विजय सिंह वीरगति को प्राप्त हुए। अनेकों क्रान्तिकारी भी मातृ भूमि के लिए लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए। युद्ध में गोरखा पलटन को भी कम नुकसान नहीं हुआ। गोरखा पलटन के बहुत से सैनिक मारे गये बहुत से घायल हो गये और कुछ को ऐसे गहरे घाव लगे जिन्होंने बाद में दम तोड़ दिया।

राजा विजय सिंह और उनके सेनापति कल्याण सिंह के साथ 152 देशभक्तों ने माँ भारती के चरणों में बलिदान दिया। उसी समय 41 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया, जिन्हें रुड़की तहसील के सुनहरा गाँव में स्थित वट वृक्ष पर फन्दे डालकर फाँसी दे दी गई। ऐसे नरसंहार देखकर सबके हृदय काँप उठे। सुनहरा गाँव का वह वट वृक्ष अंग्रेजों की क्रूरता को देखता और सहता हुआ आज भी ज्यों का त्यों खडा हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह वट वृक्ष आज भी चीख–चीख कर कहता है कि मेरी ही भुजाओं पर लटकाकर माँ भारती के वीर सपूतों को कितनी क्रूरता से मारा गया था। वह बताता है कि ये आजादी हमें ऐसे ही नहीं मिली इसके लिए कितनी ही माताओं ने अपने सपूतों और बहनों ने अपने बहादुर भाइयों को खोया है।

क्रूरता की उस दासतां को कहता और सहता हुआ वह वट वृक्ष आज भी देश की युवा पीढ़ी को संदेश देता है कि देश को आजादी कैसे मिली, मैं इसका साक्षात प्रमाण हूँ। जब मेरी डालों पर 41 बलिदानी तीन दिन तक झूलते रहे तो देशवासियों के साथ मैं भी दहल उठा था। उन देशभक्तों के दहकते चेहरे, जलती आँखें भारत माता की जय, वन्देमातरम् नारों की ऊष्मा और उनके साहस एवं संकल्पों का मैं भी साक्षी हूँ।

कितने ही तूफान, झंझावात आये, बिजलियों की गड़गड़ाहट लिए बरसातें आई और मुझे नहला कर चली गईं, ओलावृष्टि और कितने ही हिमानी थपेड़े हिमकणों से मेरा अभिषेक करके चले गये। मैंने अनगिनत बसन्त देखे कितनी पतझड़ देखीं कितने फूल खिले कितने मुरझाये पर मैं ज्यों का त्यों खडा रहा, क्योंकि मैं केवल वट वृक्ष नहीं हूँ बल्कि पराधीन भारत से लेकर स्वाधीन भारत के आज तक के इतिहास का साक्षात प्रमाण हूँ।

राजा विजय सिंह और कल्याण सिंह के बलिदान के बाद अंग्रेजों ने पूरे गाँव को आग के हवाले कर दिया और अंग्रेजों ने कल्याण सिंह के सिर को काटकर लोहे के पिंजरे में बन्द करके देहरादून जेल के मुख्य द्वार पर लटका दिया कुन्जा बहादुरपुर के किसानों की जमीन जायदादों को जब्त कर लिया गया। गाँव कुन्जा में एक ऐसा कुआँ होने के प्रमाण हैं जिसका पानी अनेक खनिज लवणों से युक्त और अमृत के समान था। एक शोध के अनुसार उस कुएँ का पानी बहुत ही ताकतवर और स्वास्थ्यवर्धक था जिसे नरसंहार के बाद अंग्रेजों ने लाशों और काँच के टुकडों से भर दिया। क्षेत्र के अनेक लोगों की जान गई, बच्चों और महिलाओं पर अत्याचार हुए, गर्भवती महिलाओं के गर्भ खण्ड़ित कर दिये गये।

वास्तव में राजा विजय सिंह और कल्याण सिंह प्रथम स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाने वाले बलिदानी थे। इन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वाधीनता की क्रान्ति प्रज्ज्वलित की थी जो 33 वर्ष पश्चात 1857 में ज्वालामुखी बनकर विस्फोट कर गई थी जिसने अंग्रेजी सरकार का मान मर्दन किया और उनके अत्याचारों से लिपटे गुरूर को चुनौती दी गयी।

आश्चर्य यह हुआ जब वर्ष 1995 में लीडेन विश्वविद्यालय नीदरलैण्डस के प्रो. डॉ. डी.एच.ए. कौफ के नेतृत्व में एक दल कुन्जा क्रान्ति पर शोध करता हुआ गाँव में पहुँचा था, उस समय गाँव में अंग्रेजी समझने वाला कोई व्यक्ति नहीं था सिवाय चौ. अजमेर सिंह जी के जिन्हें चार भाषाओं हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी का पूर्ण ज्ञान था जो आजीवन कुन्जा क्रान्ति पर शोध करते रहे और कुन्जा क्रान्ति से सम्बन्धित दस्तावेज उनके पास थे। आपस में बातचीत होने लगी। विदेशी दल कुन्जा किले में पहुँचने पर गाँव के लोगों के द्वारा किये गये सत्कार से बहुत प्रभावित हुआ। दोनों ओर से साहित्य का आदान–प्रदान हुआ। विदेशी दल के पास भी कुन्जा के स्वतन्त्रता संग्राम से सम्बन्धित बहुत से दस्तावेज थे। यही दल एक बार फिर वर्ष 1998 में कुन्जा बहादुरपुर में आया और अनेक किस्से कहानियाँ लेकर प्रस्तुत हुआ जो उन्हें लन्दन (इंग्लैण्ड) के साहित्यकारों और पत्र पत्रिकाओं से प्राप्त हुई थीं।

इतिहासकारों का मानना है कि देश के स्वतन्त्रता संग्राम में कुन्जा बहादुरपुर के निवासियों एवं क्षेत्रीय ग्रामीण लोगों का विशेष योगदान रहा है। आजादी की पहली जंग कुन्जा किले से ही प्रारम्भ हुई थी। इतिहासकारों ने राजा विजय सिंह को एक योद्धा के रुप में प्रदर्शित किया है। आज भी राजा विजय सिंह और कल्याण सिंह दोनों वीर योद्धाओं की गाथा क्षेत्र में घर–घर गाई एवं सुनाई जाती है।

कुन्जा बहादुरपुर की क्रान्ति विदेशी इतिहासकारों के लिए भी शोध का विषय रही है। विदेशी विश्वविद्यालयों ने भी इस क्रान्ति को शोध का विषय घोषित कर अपने शोधार्थियों से शोध कराया है। ग्राम कुन्जा बहादुरपुर में हुए स्वतन्त्रता संग्राम का विवरण विभिन्न दस्तावेजों, पत्र पत्रिकाओं एवं सरकारी दस्तावेजों में दर्ज है। समय–समय पर अनेकों समाचार पत्रों ने कुन्जा क्रान्ति को प्रकाशित कर जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया है।

कुँजा बहादुरपुर में राजा विजय सिंह का विशाल स्मारक बनाया गया है, जिसमें राजा विजय सिंह की घोड़े पर सवार योद्धा के रूप में प्रतिमा लगाई गई है। 9 अक्टूबर, 1989 को सहारनपुर के तत्कालीन सांसद चौधरी यशपाल सिंह तथा उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी जी ने कुंजा गांव का दौरा करके स्मारक बनाने की घोषणा की। इस स्मारक का उद्घाटन पूर्व उपराष्ट्रपति श्री एम. वैंक्यानायडू ने किया था। उत्तराखण्ड सरकार ने कुँजा बहादुरपुर में एक माध्यमिक विद्यालय राजा विजय सिंह के नाम से स्थापित किया है। अनेक देशवासी विशेष रूप से युवा वर्ग इस भव्य स्मारक पर आकर महान क्रान्तिकारियों के प्रति नतमस्तक होते हैं और देश एवं समाज सेवा का संकल्प लेकर यहाँ से जाते हैं। इस भव्य स्मारक के रख–रखाव के लिए ग्रामवासियों की एक समिति बनी है, जिसके अध्यक्ष चौ. शिवकुमार, उपाध्यक्ष चंकी चौधरी तथा मंत्री चौ. प्रमोद सिंह हैं। समिति प्रतिवर्ष स्मारक पर एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भी आयोजन करती है।

देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले अमर बलिदानी राजा विजय सिंह, सेनापति कल्याण सिंह और अंग्रेजों से लड़ते हुए अपना जीवन माँ भारती की आजादी के लिए भेंट करने वाले दो सौ से अधिक वीर योद्धा आज भी क्षेत्रवासियों के हृदय में बसे हैं। इन शहीदों के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं आचरण को लोकगीतों के माध्यम से पूरे गर्व से गाया और सुना जाता है। कुँजा बहादुरपुर की धरती ही नहीं अपितु पूरा राष्ट्र इन वीरों का ऋणी है। माँ भारती के ऐसे अनन्य वीर सेवकों को शत्–शत् नमन।